मासिक
RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

वर्ष - 19 अंक - 10 (भाग - 2)
(अगस्त - 2023)
Vol - XIX Issue No - X (Part -II)
(August - 2023)

मूल्यः 100 /- रूपये

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका



Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 7.125
» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427
AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

मूल्यः 100 /- रूपये

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

वर्ष-19 अंक - 10 , अगस्त - 2023 (भाग - 2)
Vol - XIX, Issue No. X Part - II
August - 2023
Impact Factor - 7.125
aksharwartajournal@gmail.com

Monthly International Refereed & Peer Reviewed Journal

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा

संपादक- डॉ. मोहन बैरागी

संपादक मंडल :-

डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन)
प्रो.राजश्री शर्मा
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' (आरजीपीवी,भोपाल)
डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोंसले (पुणे)
प्रो. उमापति दिक्षित
डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र)
डॉ. दिग्विजय शर्मा

सहायक सम्पादक :-

डॉ.भेरुलाल मालवीय
डॉ. अंजली उपाध्याय
डॉ. दिव्या मिश्रा
डॉ. पराक्रम सिंह
डॉ. रूपाली सारये
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

विशेषज्ञ समिति

डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे), श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस), डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस), प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू), प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली), डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई), डॉ. तुलसीदास परौहा, उज्जैन

सह संपादक

डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया (उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात), प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर, पंजाब)

नोट : पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, लेखकों के अपने विचार है, इनसे संपादक या संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। ०. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (**Kruti Dev 010**) या युनिकोड मंगल फोंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। ०. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (**Times New Roman**) ,एरियल फोंट (**Arial**) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। ०. **Please Follow- APA/MLA Style for formatting** अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 1200/-रूपये साधारण डाक से एवं 1800/- रूपये रजिस्टर्ड डाक से एवं प्रकाशन पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक :- **Union Bank of India,**

Account Holder - Aksharwarta
Current Accont NO. 510101003522430
IFSC- UBIN0907626 Branch- Rishi Nagar,Ujjain,MP,India

गुगल पे, फोन पे, पेटीएम, भीम आदि युपीआई से भुगतान के लिए मोबाईल नं. 9424014366 का उपयोग करें

तथा भुगतान की मूल रसीद,शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय का पता- संपादक अक्षर वार्ता

43,क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत, मोबा :-8989547427 Email: aksharwartajournal@gmail.com

नोट :- अक्षरवार्ता में सभी पद मानद व अवैतनिक है।/ शोध पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नही हैं।

अनुक्रम

» भीतर का देश : गहन तिमिर में जनवादी उजास की ढिबरी जलाती कविताएँ
डॉ. ममता पंत 07

» भारतीय संस्कृति के पुरोधा : श्री गुरू तेग बहादुर जी
डॉ. नीतू कौशल 13

» करूण रस के समन्वयवादी तेलुगु कवि : गुरर्मजाषुवा
डॉ. डि. सत्यलता 16

» रिपोर्टिंग के लिए कैमरे को रिप्लेस कर रहा है स्मार्टफोन
डॉ. प्रशांत कुमार, तरूण कुमार ठाकुर 18

» स्वांतर्त्योत्तर हिन्दी नाटक : मिथक के सहारे सामाजिक विद्रुपताओं की अभिव्यक्ति
डॉ. वृंधा विजयन 21

» बुंदेलखण्ड में क्रांतिकारी आंदोलन : 1925 से 1947 ई. तक
राशिद खान, प्रो. संजय स्वर्णकार 23

» मानव धर्म के रक्षक : गुरू तेग बहादुर जी
डॉ. रजनी प्रताप 25

» महाकाव्य की अवधारणा
डॉ. कल्याणी कबीर 28

» वेदों में निहित ऋत-सत्य विषयक चिंतन
डॉ. रजनीश 31

» जनपद हापुड़ में भुमि उपयोग प्रतिरूप का एक भौगोलिक अध्ययन
डॉ. नवनीत शर्मा, डॉ. रामदास सिंह 34

» भूख, कुपोषण एवं खाद्य असुरक्षा
डॉ. उमेश कुमार शाक्य 38

» श्रीमद्भगवद्गीता का भारतीय दार्शनिक विचारधारा में योगदान
डॉ. दुर्गेश कुर्मी, दिव्या पटेल 41

» लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना में न्यायालय की भूमिका
विजयलक्ष्मी जोशी 43

» राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 की व्यवहारिकता एवं बुनियादी शिक्षा क्षेत्र की कठिनाईयाँ - एक पुनरावलोकन
डॉ. सीता मिश्रा 45

» पूँजीवादी उपभोक्ता संस्कृति की कसौटी पर चित्रा मुद्गल के उपन्यासों के नारी चरित्र
डॉ. शीला 47

» भारतीय लोक साहित्य (मुण्डारी, ओराँव, सन्थाली, मलेर, हो, अवधी, बैसवाड़ी, व्रज, कन्नोजी, कौरवी, कुमाऊँनी)
डॉ. रमेशकुमार टण्डन 51

» म. प्र. में कुम्हारी व्यवसाय वर्तमान परिदृश्य : चुनौतियां एवं संभावनाएं
मनीष प्रजापति 54

» किन्नर विमर्श पर आधारित लघुकथाओं में संवेदना
डॉ. नितिन सेठी 57

» बनारसी हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का भाषा, साहित्य और राष्ट्रीयता सम्बन्धी दृष्टिकोण (1850 से 1947 ई.)
महेन्द्र सिंह मीना 60

» शिल्प संयोजन की दृष्टि से कमलेश्वर के कथा साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन
डॉ. नीलम श्रीवास्तव 64

» निमाड़ के बारेला आदिवासियों के संस्कार गीत
मंजुला डावर 67

» समकालीन महिला उपन्यास लेखन का स्वरूप
बबिता गुप्ता, डॉ. प्रतिमा सिंह 69

» मन्नू भण्डारी की साहित्यिक यात्रा
सोनम सोनी 73

» महिला उपन्यास लेखन में स्त्रीवाद (फेमिनिज्म)
डॉ. लालसिंह पुरोहित 75

» रीवा जिले की ग्रामीण, नगरीय एवं खण्डवार जननांकिकी की खांख्यिकी का तुलनात्मक विश्लेषण
डॉ. विनोद कुमार तिवारी 77

» मध्यकालीन मुस्लिम शिक्षा केन्द्र के रूप में दिल्ली की भूमिका - एक अध्ययन
आमिर हमीद, डॉ. उदय कुमार 80

» अज्ञेय की काव्य भाषा का विश्लेषण
डॉ. के. संगीता 83

» सुरेन्द्र वर्मा : सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक
जागृति, डॉ. अमितेश कुमार 86

» टीवी न्यज चैनलों में मोबाइल नागरिक पत्रकारिता अध्ययन
नीरज कुमार सिंह, डॉ. साकेत रमन 88

» बालश्रम एवं कानून
डॉ. बद्रीलाल मालवीय, डॉ. असीम कुमार शर्मा 91

» नासिरा शर्मा के उपन्यासों में नारी प्रश्न
रक्षा राय 94

» भिखारी ठाकुर के जीवन पर आधारित 'सुत्रधार' उपन्यास की भाषिक संरचना
दुर्गेश कुमार मौर्य 97

» कार्योजित महिलाओं में भूमिका - संघर्ष (वाराणसी महानगर के महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं पर आधारित अध्ययन)
प्रगति यादव 101

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 7.125
Vol - XIX, Issue - X, Part - II, August - 2023
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

भारतीय लोक साहित्य
(मुण्डारी,ओराँव,सन्थाली,मलेर,हो,अवधी,बैसवाड़ी,व्रज,कन्नौजी,कौरवी,कुमाऊँनी)

डॉ. रमेशकुमार टण्डन

सहायक प्राध्यापक, हिंदी, शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरसिया, छग.

भारत को समग्ररूपेण समझना हो, तो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में निवासरत लोगों के जन जीवन, उनकी जीवन-शैली एवं उनके मध्य प्रचलित संस्कृति को बेहद करीब से अवलोकन करना आवश्यक होता है। परन्तु भौगोलिक क्षेत्र इतना विस्तृत और दुर्गम है कि सुगमता से सभी स्थानों तक पहुँच पाना सम्भव नहीं हो सकता। अतः विद्वानों द्वारा समय-समय पर लोक साहित्य के रूप में लिखित ग्रन्थों के अध्ययन से सम्पूर्ण भारत के जन जीवन को समझा जा सकता है। यहाँ मुण्डारी, ओराँव, सन्थाली, मलेर, हो, अवधी, बैसवाड़ी, व्रज, कन्नौजी, कौरवी और कुमाऊँनी लोक साहित्य का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

मुण्डारी लोक साहित्य:- ये बिहार प्रान्त के जन जाति लोग हैं जिनके चौदह वैवाहिक लोक गीतों का संकलन जे. एम. मिचेल ने किया है। श्री लक्ष्मीनारायण साहू ने 09 लोक गीतों का संग्रह किया। मुण्डारी लोक गीतों का विस्तृत, प्रामाणिक तथा वैज्ञानिक संकलन श्री जगदीश त्रिगुणायत ने निम्नानुसार किया है-

भेद	गीत संख्या
''जदुर गीत	123
ओर जदुर	10
गेना	43
करमा	99
जरगा	49
जायी	8
जतरा	7
अड़न्दी	10''[1]

ओराँव लोक साहित्य:- डब्ल्यू. जी. आर्चर ने बिहार की ओराँव जाति के लोक गीतों को प्रकाश में लाते हुए 'ब्लू ग्रोम' नामक पुस्तक का प्रकाशन किया। इसमें लोक गीतों के अतिरिक्त 230 पहेलियाँ भी सम्मिलित हैं। इनकी अन्य पुस्तक में 409 लोक गीतों और 140 पहेलियाँ उल्लेखित हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'मैन इन इण्डिया' नामक शोध पत्रिका के विभिन्न अंकों में ओराँव जाति के विभिन्न पहलुओं पर भी लिखा है। एफ़ हान ने इस जाति की लोक कथाओं का प्रचुर मात्रा में संकलन किया, जिसे ए. ग्रिगनार्ड ने प्रकाशित किया।

सन्थाली लोक साहित्य:- डब्ल्यू. जी. आर्चर ने पत्रिका 'मैन इन इण्डिया' में बिहार के सन्थालों के गीतों के संबंध में कुछ लेख लिखे हैं। इन्होंने इस पत्रिका में सन्थालों के उत्सव संबंधी 25 गीत, सरहुल गीत 11, क्रान्तिकारी और विवाह विषयक 16 गीतों का विवेचन किया है। डोमन साहू 'समीर' स्वयं एक सन्थाल थे, इन्होंने सन्थाली भाषा में 'होड सम्बाद' नामक साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन करते हुए अपना जीवन सन्थाली लोक साहित्य की सेवा में समर्पित कर दिया। भगत मुरमू ने विविध प्रकार के 9 सन्थाली लोक गीतों का मूल रूप में संग्रह प्रस्तुत किया है। इन्होंने 'होर सेरेंग' नामक पुस्तक में सन्थाली लोक गीतो का प्रकाशन किया है। आदित्य सन्थाली ने भी 'आदिवासी' नामक साप्ताहिक पत्रिका में सन्थाली गीतों का प्रकाशन किया है।

मलेर लोक साहित्य:- बिहार के राजमहल हिल्स में निवास करने वाली मलेर जाति के लोक गीतों के संबंध में एफ़ टी. कोल ने विवेचना प्रस्तुत किया है। डॉ0 एल. पी. विद्यार्थी ने मलेर लोक गीतों पर एक पुस्तक भी लिखी है।

हो लोक साहित्य:- बिहार के सिंहभूमि जिले में 'हो' नामक जन जाति निवास करती है। इस जाति के लोक गीतों का सर्वप्रथम वर्णन डाल्टन के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'डिस्क्रिप्टिव एथ्नोलाजी आफबंगाल' में उपलब्ध होता है। डॉ0 धीरेन्द्र नाथ मजूमदार ने भी 'हो' लोक गीतों का संग्रह किया है। डब्ल्यू. जी. आर्चर ने 1942 ई. में इस जाति के लोक गीतों का प्रकाशन किया। श्री गौतम शंकर राय ने अपने एक निबंध में सिंहभूमि की 'हो' जाति के 15 गीतों को स्थान दिया है। इस जाति की लोक कथाओं को प्रकाश में लाने वाले प्रारम्भिक विद्वानों में सुकुमार हल्दर का नाम भी विशेष उल्लेखनीय है। इन्होंने बिहार तथा ओड़िसा रिसर्च सोसायटी की पत्रिका में 'हो' जाति की 30 कथाओं का प्रकाशन किया। श्री शरतचन्द्र मित्र ने कुछ 'हो' कथाओं का प्रकाशन किया, जिसमें सिंहभूमि की 'हो' जाति की रानी की प्रसिद्ध कथा समाहित है। कन्हु देवगम नाम के एक 'हो' विद्वान ने 'हो' लोक गीतों का अध्ययन किया, साथ ही पत्रिका 'मैन इन इण्डिया' में कुछ लोक कथाओं का भी प्रकाशन भी किया।

अवधी लोक साहित्य:- अवध का प्राचीन नाम कोशल था। इस कोशल की राजधानी अयोध्या थी। अवधी भाषा लखनऊ और फैजाबाद के क्षेत्र में बोली जाती है। डब्ल्यू. सी. बारनेट प्रथम विद्वान थे, जिन्होंने अवधी जनपद की किसी लोक कथा का प्रकाशन किया। इस कथा में भवन मिश्र नामक पहलवान के द्वारा अपने भांजे मिर्चीदन्द को परास्त करने का वर्णन मिलता है। विलियम क्रुक का शोध क्षेत्र मुख्यतया मिर्जापुर जनपद था, परन्तु इन्होंने अवध के संबंध में दो-तीन ग्रन्थों का निर्माण किया है।

अवध प्रान्त के लोक गीतों को प्रकाश में लाने का श्रेय पं0 रामनरेश त्रिपाठी को प्राप्त है, जिन्होंने अपनी 'कविता कौमुदी' भाग - 5 में अवधी लोक गीतों का प्रामाणिक संकलन प्रस्तुत किया है। डॉ0 इंदु प्रकाश पाण्डेय ने 'अवधी लोक-गीत और परम्परा' में अवधी के केवल संस्कार गीतों का संकलन किया है। इन्होंने अपनी एक अन्य पुस्तक 'अवधी लोक

कथाएँ' में अवधी लोक कथाओं का भी संकलन किया है। इनकी अन्य पुस्तक 'अवधी व्रत कथाएँ' है, जिसमें केवल रविवार की कथा ठेठ अवधी में है, शेष कथाएँ खड़ी बोली में उल्लेखित हैं। डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय ने सोहर, विवाह, नकटा, झूमर, सावन, कजरी, बारहमासा, विरहा, कहरऊ, निरवाही गीतों का संकलन कर पुस्तक प्रकाशित किया है। श्री सत्यव्रत अवस्थी ने 'विहाग रागिनी' के नाम से कुछ लोक गीतों को प्रकाशित किया है।

डॉ0 विद्या बिन्दु सिंह ने अपने शोध प्रबंन्ध 'अवधी लोक गीत समीक्षात्मक अध्ययन' में फैजाबाद क्षेत्र से हजारों लोक गीतों को संकलन किया है, जिसमें अवधी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनैतिक जीवन का सांगोपांग वर्णन मिलता है। इसमें लोक गीतों के संगीत पक्ष पर भी प्रकाश डाला गया है। डॉ0 सरोजनी रोहतगी ने 'अवधी का लोक साहित्य' नामक शोध प्रबंन्ध लिखा है, जिसमें संस्कार गीतों का वर्णन मिलता है। डॉ0 चक्रपाणि पाण्डेय ने 'पूर्वी अवधी के लोक गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन', श्रीमती चन्द्रकला शर्मा ने 'पूर्वी अवधी के लोक गीतों का अध्ययन', डॉ0 गौरीशंकर मिश्र ने 'अवधी पहेलियों का सांस्कृतिक अध्ययन' तथा डॉ0 छोटेलाल द्विवेदी ने 'अवधी लोकोक्तियों का सांस्कृतिक अध्ययन' शोध प्रबन्ध लिखकर अवधी लोक साहित्य की सेवा करने का अवसर प्राप्त किया। डॉ0 महेश प्रताप नारायण अवस्थी ने अवधी प्रदेश के विभिन्न जनपदों में घूम-घूमकर लोक गीतों का संकलन किया है। इन्होंने इन गीतों को तीन भागों में प्रकाशित किया। प्रथम भाग में 725 गीत, द्वितीय भाग में 525 गीत तथा तृतीय भाग में 1000 गीत संकलित हैं। प्रथम दो भाग 'अवधी लोक गीत' तथा तृतीय भाग 'अवधी लोक गीत हजारा' के नाम से प्रसिद्ध है।

बैसवाड़ी लोक साहित्य:- अवधी क्षेत्र में स्थित उन्नाव, लखनऊ, रायबरेली और फतेहपुर जिलों को 'बैसवाड़ा' के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को 'बैसवाड़ी' के नाम से पुकारते हैं। बैसवाड़ी लोक गीतों के सर्वप्रथम लेखक तथा संग्रहकर्श्रा योगेन्द्र नाथ राय थे, जिन्होंने सन् 1884 ई. में 'बैसवाड़ी फोक सांग्स' नाम से एक लेख, जर्नल आफदि बेंगाल एशियाटिक सोसाइटी की शोध पत्रिका में लिखा था। सन् 1976 ई. में श्री कन्हैया लाल अवस्थी ने बैसवाड़ा अंचल के लोक गीतों, जीवन और कला आदि पर शोध प्रबंध लिखा।

व्रज लोक साहित्य:- यह शौरसेनी अपभ्रंश की पश्चिमी हिन्दी की एक बोली है। उश्ररप्रदेश में मथुरा, आगरा, बुलन्दशहर, एटा, मैनपुरी, बदायूँ, बरेली; राजस्थान में भरतपुर, धौलपुर, कुरौली तथा मध्यप्रदेश में ग्वालियर के पश्चिमी भाग में व्रजभाषा बोली जाती है। व्रज लोक साहित्य के क्षेत्र में डॉ0 सत्येन्द्र का नाम अग्रगण्य है। इन्होंने 'व्रज लोक साहित्य का अध्ययन', 'व्रज की लोक कहानियाँ', 'जाहरपीर गुरु गुग्गा', 'व्रज लोक संस्कृति' लिखकर व्रजभाषा व संस्कृति की सेवा की। 'जाहरपीर गुरु गुग्गा' में लोक गाथाएँ संकलित हैं। राजस्थान के पूर्वी अंचल के लोक साहित्य के संकलन और विवेचन का कार्य डॉ0 गोविन्द रजनीश ने किया है। 'व्रज और बुन्देली लोक गीतों में कृष्ण कथा' शोध प्रबन्ध में डॉ0 शालिग्राम गुप्त ने व्रज के लोक गीतों में प्राप्त कृष्ण कथा संबंधी गीतों का विवेचन किया है।

कल्याण प्रसाद वर्मा ने 'करौली क्षेत्र का ख्याल साहित्य' नामक कृति में करौली क्षेत्र में प्रचलित ख्यालों जैसे - तुर्रा, कलंगी और हेला पर रोचक सामग्री प्रस्तुत की है। व्रज लोक साहित्य पर अनेक शोध प्रबन्ध लिखे गए हैं, जो कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं। जैसे- आशा शर्मा का 'व्रज क्षेत्र की व्रतानुष्ठानिक कहानियों का अध्ययन', चन्द्रकला त्यागी का 'बुलन्दशहर के संस्कार संबंधी लोक गीतों का मध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग के आधार पर अध्ययन', चिरंजीलाल झा का 'व्रज में लोक चित्रकला निबद्ध लोक साहित्य', डॉ0 सावित्री सरीन का 'व्रज लोक कथाओं के अभिप्रायों का अध्ययन', मथुराप्रसाद दूबे का 'आगरा जिले के लोक गीतों का शास्त्रीय अध्ययन', प्रभुदयाल मितल का 'व्रज का सांस्कृतिक इतिहास' आदि व्रज लोक साहित्य के अध्ययन में सहायक सिद्ध होते हैं। आदर्श कुमारी यशपाल ने 'व्रज की लोक कथाएँ' में इस क्षेत्र की लोक कथाओं का संकलन किया है। ये बालोपयोगी अधिक हैं। इन्होंने लोक कथाओं से संबंधित दूसरी पुस्तक 'पुण्य की जड़हरी' भी लिखी है। डॉ0 राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी ने 'व्रज लोक गीत' नाम से व्रज के लोक गीतों का संकलन सम्पादित किया है।

कन्नौजी लोक साहित्य:- यह फर्रुखाबाद, शाहजहाँपुर और इटावा जिलों में बोली जाती है। इस बोली के लोक साहित्य के विद्वानों में डॉ0 सन्तराम 'अनिल' का नाम अग्रगण्य है। इन्होंने अपनी 'कनउजी लोक-गीत' नामक पुस्तक में कन्नौजी लोक गीतों का सर्वप्रथम संग्रहण करते हुए 75 लोक गीतों को समाहित किया है। डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा ने भी अपनी 'व्रजभाषा' पुस्तक में कन्नौजी की चार कहानियों को मूल रूप में उद्धृत किया है। डॉ0 सुरेश चन्द्र त्रिपाठी ने अपने शोध प्रबंध 'कनउजी लोक साहित्य में समाज का प्रतिबिम्ब' में कन्नौजी लोक साहित्य के विविध रूपों का वर्णन किया है। साथ ही इन्होंने इस प्रदेश के सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक जीवन का विस्तृत और प्रामाणिक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

कौरवी लोक साहित्य:- प्राचीन कुरु जनपद (कौरव और पाण्डव का प्रसिद्ध युद्ध 'महाभारत' इसी भूमि पर लड़ा गया था) की बोली को कौरवी के नाम से जाना जाता है। इस बोली का प्रचार उश्ररप्रदेश के पश्चिम जिलों जैसे - देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बुलन्दशहर, अनूपशहर, बिजनौर, मुरादाबाद तथा हरियाणा के हिसार और रोहतक जिलों में फैला हुआ है। विदेशी विद्वानों में मात्र विलियम क्रुक ने ही इस प्रदेश के जादू-टोना और विश्वासों पर अनेक लेख लिखे। सन् 1991-92 ई. में 'नार्थ इण्डियन नोट्स एण्ड क्वेरीज' पत्रिका में इनके कम-से-कम दस लेख प्रकाशित हुए हैं। इनमें मुजफ्फरनगर जिले के जन-जीवन, जादू, टोटका, लोक-विश्वास आदि पर प्रचुर प्रकाश डाला गया है। इन्होंने इस जिले के संस्कार गीतों का भी वर्णन अपने लेखों में किया है। इन्होंने सहारनपुर जिले के लोक-विश्वास, डायन, जादू-टोना, भूत-विद्या, मंत्र-तंत्र आदि का विशद वर्णन अपने लेखों में किया है।

पं0 राम गरीब चौबे ने अपने अनेक लेखों में कुरु जनपद के अनेक लोक गीतों को वर्णन किया है तथा अपने एक लेख में सहारनपुर के स्थानीय गीतों का उल्लेख किया है। श्री अमीचन्द और कुन्दन लाल ने मुजफ्फरनगर की लोक कथाओं का वर्णन किया एवं मुनीश्वर प्रसाद तिवारी ने मुरादाबाद जिले में प्रचलित राजा विक्रमादित्य के पराक्रमों की कथा का वर्णन किया है। राहुल सांकृत्यायन ने मवाना गाँव की रामन बाई नाम की एक वृद्ध महिला से कौरवी लोक गीतों को सुन कर उन्हें लिपिबद्ध करते हुए 'आदि हिन्दी के गीत और कहानियाँ' नामक पुस्तक लिखी। रामन बाई को हजारों गीत याद थे। सीता, लीला एवं दमयन्ती ने समेकित रूप से दो पुस्तकें भी लिखी हैं। प्रथम पुस्तक 'ग्राम गीतों में करुण रस' में करुण रस से युक्त गीतों का विशेष संकलन किया गया है। दूसरी पुस्तक का नाम है - 'धूल धूसरित मणियाँ'। यह कुरु क्षेत्र के लोक गीतों का सबसे प्रामाणिक संकलन है। दाम्पत्य जीवन और लोक भावों को चित्रित करने वाले ये लोक गीत

अत्यन्त मधुर है। इसमें सावन के लुभावने गीत भी शामिल हैं। इन गीतों को ये तीनों संग्रहकश्राओं ने गाँव-गाँव जाकर महिलाओं के मुख से सुनकर लिपिबद्ध किया है। डॉ0 सत्या गुप्ता ने 'खड़ी बोली के लोक गीत' नामक पुस्तक में कुरु जनपद के सैकड़ों लोक गीतों को संकलित किया है।

डॉ0 कृष्ण चन्द्र शर्मा ने मेरठ जनपद के संस्कार गीत, मृत्यु गीत, देवता संबंधी गीत, ऋतु गीत, चर्या गीत तथा कृषि संबंधी गीतों का विवेचन अपने शोध प्रबंध में प्रस्तुत किया है। डॉ0 शान्ति देवी गुप्ता ने 'मुरादाबाद जनपद के लोक साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन' नामक अपने शोध प्रबन्ध के दूसरे भाग में 179 लोक गीतों एवं 16 लोक कथाओं को समाहित किया है। डॉ0 स्वर्ण कान्ता आर्य ने मेरठ जनपद के संस्कार विषयक लोक गीतों को अपने शोध का विषय बनाया है। डॉ0 कृष्ण चन्द्र शर्मा ने अपना सम्पूर्ण जीवन कौरवी लोक साहित्य की सेवा में लगा दिया। अंतिम समय में 'कुरु लोक संस्थान' की भी स्थापना इन्होंने की।

कुमाऊँनी लोक साहित्य:- यह बोली उश्रप्रदेश के नैनीताल और अल्मोड़ा जिलों में बोली जाती है। ''सुप्रसिद्ध भारतशास्त्री रूसी विद्वान इवान पावलोविच मिनायेव (1840-90) ने सन् 1875 ई. में हिन्दी के पर्वतीय क्षेत्र कुमाऊँ की लोक कथाओं, दन्तकथाओं तथा स्वांगों का संग्रह किया था।''[2] गुमानी कवि, कुमाऊँनी के प्रसिद्ध व लोकप्रिय कवि थे। इनके बारे में डॉ0 ग्रियर्सन ने एक लेख भी लिखा है। पं0 गंगा दश्र उप्रेती ने कुमाऊँ की लोकोक्तियों का संकलन कर अंग्रेजी में अनुवाद भी प्रकाशित किया है। डॉ0 डी एन मजूमदार ने कुमाऊँ क्षेत्र में निवास करने वाली खस नामक जन जाति के सांस्कृतिक जीवन को उजागर किया है। ''कुमाऊँनी लोक गीतों के सर्वप्रथम संग्रह का श्रेय पं0 रामनरेश त्रिपाठी को प्राप्त है, जिन्होंने अपनी पुस्तक 'कविता कौमुदी' भाग 5 में इस क्षेत्र के कुछ लोक गीतों को संकलन किया है।''[3] ''श्री देवेन्द्र सत्यार्थी ने भी इन गीतों का उद्धरण अपनी पुस्तक में दिया है।''[4] इस क्षेत्र के लोक साहित्य का सबसे अधिक वैज्ञानिक अध्ययन डॉ0 त्रिलोचन पाण्डेय ने किया है, जो इनके ग्रन्थ 'कुमाऊँ का लोक साहित्य' से स्पष्ट पता चलता है। इस ग्रन्थ में कुमाऊँ के 500 लोक गीतों, 80 लोक गाथाओं, 70 दन्तकथाओं, 20 पहेलियों तथा लगभग 2000 कहावतों और मुहावरों को संकलित कर इनका सुन्दर विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इनकी दूसरी पुस्तक 'कुमाऊँनी भाषा और उसका साहित्य' है, जिसके 7वें से 12वें अध्याय तक कुमाऊँनी लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे- लोक गीत, लोक गाथा, लोक कथा आदि की विशद मीमांसा उदाहरण सहित की गई है। ''कुमाऊँनी लोक गाथाओं पर डॉ0 उर्वादश्र उपाध्याय का शोध कार्य भी उल्लेखनीय है। प्रारम्भिक भूमिका के उपरान्त कुमाऊँनी की वीरगाथाओं जैसे- रणुवा रौत, भगुवा रौत, प्रेमगाथाओं- मालू शाही, देवगाथाओं- हरू तथा सैम और गँवरा की गाथा आदि का सारांश हिन्दी में प्रस्तुत करते हुए उनकी भावात्मक समीक्षा, भाषा शैली और काव्यगत विशेषताओं पर प्रचुर प्रकाश डाला गया है।''[5]

पादरी ओकले और तारादश्र गैरोला ने कुमाऊँ क्षेत्र की विविध लोक कथाओं को संकलन कर उसका केवल अंग्रेजी में अनुवाद प्रस्तुत किया। मोहन चन्द्र उप्रेती ने अपनी पुस्तक 'कुमाऊँनी लोक साहित्य' में इस लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं पर प्रकाश डाला है। इन्होंने अपनी पुस्तक 'लोक नाट्य - एक अध्ययन' में कुमाऊँ क्षेत्र में प्रचलित लोक नाट्यों जैसे चाँचार और छपेली आदि की प्रामाणिक मीमांसा की है। डॉ0 प्रयाग जोशी ने चार प्रकार की कुमाऊँनी लोक गाथाओं का संग्रह किया है - जागर वार्ता में सिदुवा, विदुवा और गंगू रमोला की लोक गाथा है; पवाड़ा में रतनचन्द्र की गाथा है; राना रावत और ऋतु रैण के अन्तर्गत गोरिधना की गाथा दी गई है। डॉ0 कृष्णानन्द जोशी ने अपनी पुस्तक 'कुमाऊँ का लोक साहित्य' के प्रथम सात अध्यायों में लोक गीतों का संग्रह किया है, अध्याय नौ में पहेलियों तथा अध्याय दस में लोकोक्तियों का संकलन दिखाई देता है। इन्होंने इस ग्रन्थ में जादू टोना करने वाले मंत्रों का भी संकलन किया है।

संदर्भ सूची :-

1. डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय: भारत में लोक साहित्य, साहित्य भवन प्रा0 लि0 इलाहाबाद, पृ0 107-108
2. डॉ0 त्रिलोचन पाण्डेय: लोक साहित्य का अध्ययन, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 163
3. कविता कौमुदी: भाग 5, पृ0 42, 73
4. देवेन्द्र सत्यार्थी: बाजत आवे ढोल, पृ0 53
5. डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय: भारत में लोक साहित्य, साहित्य भवन प्रा0 लि0 इलाहाबाद, पृ0 134